MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

विद्यावार्ता

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

Issue-30, Vol-04 April to June 2019

Editor

Dr.Bapu G.Gholap

Scanned by CamScanner

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

April To June 2019
Issue-30, Vol-03

Date of Publication
01 May 2019

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat**.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Scanned by CamScanner

Index

01) The impact of climate change on Business Strategies
Nisha Agrawal, Bhopal MP ||10

02) Menstruation a Social and Traditional Taboo
Dr. Gagan Kumar , Smt. Priyanka Bharti, Sitapur ||12

03) RESERVATION FOR HIGHER CASTES COMMUNITIES IN INDIA .....
Jatavath Hanumu ,Hyderabad ||16

04) Flow of credit to agriculture in India
Prof. Dr. T. P. More,Buldana (MS) ||19

05) ENVIRONMENT AND HEALTH ISSUES OF MARBLE MINING .....
DR. Anju Ojha,DR. M. M.Sheikh, Churu ||23

06) The role of computers in mathematics learning
Anil Kumar Jain , Jaipur ||31

07) Sustainability of Economy and Money laundering
Prof. Dilpreet Kaur,LUDHIANA. ||36

08) Rosie-The Eternal Heroine in R.K. Narayans, The Guide
Asst. Prof.Shikha, Hariana ||43

09) A STATUS OF RURALWOMEN ENTREPRENEURSHIP IN INDIA ....
P. Thangaraj,Dr. P. Loganathan,Namkkaal (Dt) ||45

10) Economic Ideas of Mahadev Govind Ranade
Dr. Manjula Upadhyay, Lucknow ||49

11) An over View of Human Right in the Context of History
Vijay Shankar,Sri.Muktsar Sahib. ||55

12) Macrophytes Biodiversity of Sikam Reservoir from Rajura.....
S.A. Dhoble, Y.B. Gedam & M.B.Wadekar, Chandrapur ||58

13) Problems of Indian Agriculture Marketing
Prof. Dr. Sangram R. Raghuwanshi, Amravati ||61

www.vidyawarta.com/03 — http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned by CamScanner

14) ORIGIN OF THE POLICE
Dr. G. Sanjeevayya, Andhra Pradesh ||64

15) डोपिंग विरोधी चळवळ गतीमान करणे काळाची गरज
डॉ.घायाळ बाबुराव लक्ष्मणराव,नांदेड ||68

16) कविता गजाआडच्या : स्त्री जाणिवांचा अविष्कार
प्रा.डॉ. सूर्यकांत हरिश्चंद्र गित्ते,बुलडाणा. ||70

17) डोपिंगमुळे खेळाडूंवर होणारे परिणाम आणि उपाययोजना
डॉ.जाधव धरमसिंग गेमसिंग,नांदेड ||74

18) स्त्री दु:खाचा उत्कट उद्‌गार म्हणजे 'वेदन'
प्रा. सौ. संगीता नारायणराव मुंढे, हिंगोली. ||76

19) पश्चिम महाराष्ट्र आणि मराठवाडा विभागातील आंतरविवाह .....
डॉ.संजय ज्ञानोबा सावंत,कोल्हापूर ||78

20) एकोणिसावे शतक आणि महाराष्ट्रातील दलित चळवळ : एक आकलन
डॉ.एस.डी. सावंत,लातूर ||81

21) संत कवयित्रींच्या अभंगाची सामाजिक उपयुक्तता
डॉ.प्रतिभा सुधीर पेंडके, कु.अर्चना शंकरराव कोहळे ||87

22) भारतातील उच्च शिक्षण स्वरूप : विवेचन – एक अभ्यास
प्रा.डॉ.उन्मेश शेकडे, लातूर ||90

23) विद्यार्थी केंद्रीत महाराष्ट सार्वजनिक विद्यापीठ कायदा – २०१६
श्री.संतोष रंगराव शहापूरकर, कोल्हापूर ||94

24) वडगाव लढाईतील भिवराव पानसे यांची कामगिरी (१७७९)
प्रा.डॉ.भानुसे कारभारी लक्ष्मण,औरंगाबाद ||97

25) अमर्त्य सेन यांचे अर्थिक विचार
प्रा.डॉ.राजेंद्र निंबा बोरसे, लोणार ||99

26) सोळाव्या लोकसभा निवडणूकीतील माध्यमांची सक्रियता व गतीशीलता आणि ...
गजानन सहादेव उपरीकर, नागपूर. ||101

www.vidyawarta.com/03 — http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned by CamScanner

27) शरतचंद्र चट्टोपाध्याय कृत देहाती समाज में किसान जीवन
अंजु लता,असम || 105

28) भारतीय समाज में नारी अस्मिता
अजीत कुमार दीक्षित, मुरादाबाद ||110

29) विलास गुप्ते के साहित्य में राजनीतिक क्षेत्र में मूल्य विघटन की समस्या
गुंजाळ बाळासाहेब पढरीनाथ,रत्नागिरी. ||114

30) क्रीडा क्षेत्र में खिलाडी एवंम् प्रतिबन्धीत द्रव्ये (औषधी)
प्रा.डॉ. जुझारसिंघ निर्मलसिंघ सिलेदारा, नांदेड ||118

31) वैदिक साहित्य में उल्लिखित संस्कारों का विश्लेषण
डॉ०उमा सिंह, लखनऊ ||119

32) प्राचीन भारतीय स्रोत में महिला शिक्षा के संदर्भ
डॉ.शैलेन्द्र तिवारी, वाराणसी ||125

33) उषा प्रियम्वदा का उपन्यास नदी भाषा — शिल्प के संदर्भ में
सुनीता देवी, चंडीगढ़ ||131

34) तीर्थराज प्रयाग की महत्ता
डॉ० राजेश कुमार यादव, बाराबंकी, उ०प्र० ||133

35) राष्ट्रीय साँस्कृतिक काव्यकार माखनलाल चतुर्वेदी.....
डॉ.सपना बंसल, Summer Hill Shimla. ||135

36) नक्सलवाद : एक समाजशास्त्रीय विवेचन
डॉ. गीता सामौर, जयपुर (राज.) ||141

37) महिला समस्या एवं मानवाधिकार की आवश्यकता
राजेन्द्र सिसोदिया,इन्दौर, (म.प्र.) ||145

38) साहित्य, समाज और मीडिया के अन्तर्सम्बन्धों में बदलाव
डॉ. गोपीराम शर्मा,श्रीगंगानगर (राज.) ||147

39) ब्रज संस्कृति में संगीत का महत्व
डॉ०वन्दना अग्रवाल, मेरठ ||151

www.vidyawarta.com/03 — http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned by CamScanner

27

शरतचंद्र चट्टोपाध्याय कृत देहाती समाज में किसान जीवन

अंजु लता
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
तेजपुर विश्वविद्यालय, तेजपुर, असम

****

भारत को आजादी के मिलने के लगभग सौ वर्ष पहले से ही समाज में परिवर्तन की ध्वनि परिलक्षित होने लगी थी। इन परिवर्तनों का साहित्य, संस्कृति, कला, राजनीति आदि पर गहरा प्रभाव दिखाई देता है। धीरे–धीरे इन्हीं परिवर्तनों की कोख से साम्राज्यवादी शक्ति से लड़ने का जो सामाजिक और राजनैतिक वातावरण तैयार होता है उसमें साहित्य की भूमिका महत्वपूर्ण दिखाई देती है। बीसवीं सदी के साहित्यकारों में गहरी सामाजिक संवेदनशीलता उभरकर सामने आती है। ये रचनाकार सामाजिक अन्याय और भेदभाव के विरूद्ध लगातार अपने साहित्य के माध्यम से संघर्ष करते हैं। इस संघर्ष के क्रम में रचनाकार सामाजिक विसंगतियों को बहस के केंद्र में लेकर आता है। इस समय का साहित्य केवल मनोरंजन का कार्य नहीं करता है बल्कि अपनी सामाजिक और वर्गीय पक्षधरता को भी निर्धारित करता है। वह समाज के उस वर्ग के यथार्थ को सामने लेकर आता है जिसकी मूलभूत आवश्यकताएं पूरी नहीं हो पाती हैं। जिसके सामने तमाम धार्मिक और सामाजिक प्रतिबंध है और एक खास वर्ग और जाति के होने के कारण उनको भेदभाव का शिकार होना पड़ता है।

हर समय के समाज की अपनी कुछ जरूरतें होती ही और साहित्यकार की जिम्मेदारी होती है कि वह अपने साहित्य के माध्यम से उन जरूरतों को पूरा करे। वह परंपरा का मूल्यांकन करता है और इस क्रम में वह परंपरा को अपनी विचारधारा के अनुसार रिवाइव करता है। समय की आवश्यकता के अनुसार तथ्यों को जोड़ता और निकालता है। जब शरतचंद्र ने लिखना आरंभ किया तो उस समय उनके सामने बांग्ला साहित्य की एक लंबी और समृद्धशाली परंपरा मौजूद थी। अधिकांश साहित्य नवजागरण के प्रकाश में रचा जा रहा था जिसका प्रभाव संपूर्ण भारतीय साहित्य पर पड़ता दिखाई देता है। नवजागरणकालीन साहित्य में विधवा विवाह, जात–पात का विरोध, धार्मिक कट्टरता की भावना का विरोध, बाल विवाह का विरोध साफ दिखाई देता है। शरतचंद्र के लेखन को इसी परंपरा के आलोक में देखने की जरूरत है।

शरतचंद्र का उपन्यास पल्ली समाज मुख्य रूप से जमींदारों की कथा को केंद्र में रखकर लिखा गया है। इस उपन्यास में एक तरह का आत्मसंघर्ष दिखाई देता है– रचनाकार का स्वयं से और समाज से। शरतचंद्र जमींदारों के दोहरे चरित्र को उभार कर सामने लाते हैं। पूरे उपन्यास में उनकी प्रतिबद्धता समाज के शोषित पीड़ित वर्ग के प्रति लगातार परिलक्षित होती है। शरतचंद्र स्वयं जमींदार परिवार से थे लेकिन समाज के शोषित और पीड़ित वर्ग के प्रति उनकी आत्मीयता और संवेदनशीलता के कारण ही वे इस तरह की रचना कर पाते हैं।

शरतचंद्र के साहित्य का अनुवाद लगभग सभी भारतीय भाषाओं में किया गया है। यह अकेले ऐसे कथाकार हैं जिनके अधिकांश साहित्य पर फिल्में बन चुकी हैं। अपने साहित्य में शरतचंद्र ने समाज के सामंती मानदंडों को लगातार ध्वस्त करने का कार्य किया है। धर्म के पाखंड तथा जाति और वंश को मानने वाले समाज की सीमाओं को रेखांकित किया है। वह सारे नियम कानून जिन्हें समाज सहज ही ग्रहण करता है और इस क्रम में एक खास वर्ग को मनुष्य की श्रेणी में नही गिनता, उस समाज की विसंगतियों को इनके साहित्य में बेहतरीन ढंग से दर्शाया गया है। पल्ली समाज इसी तरह की संवेदना को व्यक्त करने वाला उपन्यास है। चूंकि उपन्यास का स्वरूप ऐसा होता है कि उसमें लेखक का जीवन दर्शन व्यक्त होता है, उसका दायरा बहुत बड़ा होता है, एकसाथ वह कई

Scanned by CamScanner